श्री लक्ष्मी चालीसा

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

श्री लक्ष्मी चालीसा

प्रकार	चालीसा
देवता	माँ लक्ष्मी
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	अनेक परम्पराओं में प्रचलित
स्रोत	51 चालीसा संग्रह (आरतियों सहित) — रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (2004) — Scan pages 186–189
आभार	पाठ मुद्रित प्रति के स्कैन से लिया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional devotional text in wide circulation. The poet named in the closing verse is a traditional attribution; no mo

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास ।

mātu lakṣmī kari kṛpā, karo hṛday meṃ vās |

मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस ॥

manokāmanā siddha kari, puravahu merī ās ||

यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करूँ ।

yahī mor aradās, hāth joṛ vinatī karūm |

सबविधि करौ सुवास, जय जननि जगदंबिका ॥

sabavidhi karau suvās, jay janani jagadaṃbikā ||

सिन्धु सुता मैं सुमिरौं तोही ।

sindhu sutā maiṃ sumirauṃ tohī |

ज्ञान बुद्धि विद्या दे मोही ॥ १ ॥

jñān buddhi vidyā de mohī || 1 ||

तुम समान नहीं कोई उपकारी ।

tum samān nahīṃ koī upakārī |

सब विधि पुरवहु आस हमारी ॥ २ ॥

sab vidhi puravahu ās hamārī || 2 ||

जय जय जय जननी जगदम्बा ।

jay jay jay jananī jagadambā |

सबकी तुम ही हो अवलम्बा ॥ ३ ॥

sabakī tum hī ho avalambā || 3 ||

तुम हो सब घट घट के वासी ।

tum ho sab ghaṭ ghaṭ ke vāsī |

विनती यही हमारी खासी ॥ ४ ॥

vinatī yahī hamārī khāsī || 4 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

जग जननी जय सिन्धुकुमारी ।

jag jananī jay sindhukumārī |

दीनन की तुम हो हितकारी ॥ ५ ॥

dīnan kī tum ho hitakārī || 5 ||

बिनवौं नित्य तुमहिं महारानी ।

binavauṃ nitya tumahiṃ mahārānī |

कृपा करो जग जननि भवानी ॥ ६ ॥

kṛpā karo jag janani bhavānī || 6 ||

केहि विधि स्तुति करौं तिहारी ।

kehi vidhi stuti karauṃ tihārī |

सुधि लीजै अपराध बिसारी ॥ ७ ॥

sudhi lījai aparādh bisārī || 7 ||

कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी ।

kṛpā dṛṣṭi citavo mam orī |

जग जननी विनती सुन मोरी ॥ ८ ॥

jag jananī vinatī sun morī || 8 ||

ज्ञान बुद्धि सब सुख का दाता ।

jñān buddhi sab sukh kā dātā |

संकट हरो हमारी माता ॥ ९ ॥

saṃkaṭ haro hamārī mātā || 9 ||

क्षीर सिन्धु जब विष्णु मथायो ।

kṣīr sindhu jab viṣṇu mathāyo |

चौदह रत्न सिन्धु में पायो ॥ १० ॥

caudah ratna sindhu meṃ pāyo || 10 ||

चौदह रत्न में तुम सुखरासी ।

caudah ratna meṃ tum sukharāsī |

सेवा कियो प्रभु बन दासी ॥ ११ ॥

sevā kiyo prabhu ban dāsī || 11 ||

जो जो जन्म प्रभु जहां लीना ।

jo jo janma prabhu jahāṃ līnā |

रूप बदल तहँ सेवा कीन्हा ॥ १२ ॥

rūp badal taham sevā kīnhā || 12 ||

स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा ।

svayaṃ viṣṇu jab nar tanu dhārā |

लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा ॥ १३ ॥

līnheu avadhapurī avatārā || 13 ||

तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं ।

tab tum pragaṭ janakapur māhīṃ |

सेवा कियो हृदय पुलकाहीं ॥ १४ ॥

sevā kiyo hṛday pulakāhīṃ || 14 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

अपनायो तोहि अन्तर्यामी ।

apanāyo tohi antaryāmī |

विश्व विदित त्रिभुवन के स्वामी ॥ १५ ॥

viśva vidit tribhuvan ke svāmī || 15 ||

तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनि ।

tum sam prabal śakti nahiṃ āni |

कहँ लौं महिमा कहौं बखानी ॥ १६ ॥

kaham lauṃ mahimā kahauṃ bakhānī || 16 ||

मन क्रम वचन करै सेवकाई ।

man kram vacan karai sevakāī |

मन इच्छित वांछित फल पाई ॥ १७ ॥

man icchit vāṃchit phal pāī || 17 ||

तजि छल कपट और चतुराई ।

taji chal kapaṭ aur caturāī |

पूजहिं विविध भाँति मनलाई ॥ १८ ॥

pūjahiṃ vividh bhāmti manalāī || 18 ||

और हाल मैं कहौं बुझाई ।

aur hāl maiṃ kahauṃ bujhāī |

जो यह पाठ करै मन लाई ॥ १९ ॥

jo yah pāṭh karai man lāī || 19 ||

ताको कोई कष्ट न होई ।

tāko koī kaṣṭa na hoī |

मन इच्छित पावै फल सोई ॥ २० ॥

man icchit pāvai phal soī || 20 ||

त्राहि त्राहि जय दुख निवारिणी ।

trāhi trāhi jay dukh nivāriṇī |

ताप भव बंधन हारिणी ॥ २१ ॥

tāp bhav baṃdhan hāriṇī || 21 ||

जो यह पढ़े और पढ़ावे ।

jo yah paṛhe aur paṛhāve |

ध्यान लगाकर सुनै सुनावै ॥ २२ ॥

dhyān lagākar sunai sunāvai || 22 ||

ताको कोई न रोग सतावे ।

tāko koī na rog satāve |

पुत्र आदि धन सम्पति पावै ॥ २३ ॥

putra ādi dhan sampati pāvai || 23 ||

पुत्रहीन अरु संपतिहीना ।

putrahīn aru saṃpatihīnā |

अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना ॥ २४ ॥

andha badhir koṛhī ati dīnā || 24 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

विप्र बोलाय के पाठ करावै ।

vipra bolāy ke pāṭh karāvai |

शंका दिल में कभी न लावै ॥ २५ ॥

śaṃkā dil meṃ kabhī na lāvai || 25 ||

पाठ करावै दिन चालीसा ।

pāṭh karāvai din cālīsā |

तापर कृपा करें गौरीसा ॥ २६ ॥

tāpar kṛpā kareṃ gaurīsā || 26 ||

सुख सम्पति बहुत सो पावै ।

sukh sampati bahut so pāvai |

कमी नहीं काहु की आवै ॥ २७ ॥

kamī nahīṃ kāhu kī āvai || 27 ||

बारह मास करै सो पूजा ।

bārah mās karai so pūjā |

तेहि सम धन्य और नहिं दूजा ॥ २८ ॥

tehi sam dhanya aur nahiṃ dūjā || 28 ||

प्रतिदिन पाठ करै मनमाहीं ।

pratidin pāṭh karai manamāhīṃ |

उन सम कोई जग में कहुँ नाहीं ॥ २९ ॥

un sam koī jag meṃ kahum nāhīṃ || 29 ||

बहु विधि क्या मैं करौं बड़ाई ।

bahu vidhi kyā maiṃ karauṃ baṛāī |

लेय परीक्षा ध्यान लगाई ॥ ३० ॥

ley parīkṣā dhyān lagāī || 30 ||

करि विश्वास करै व्रत नेमा ।

kari viśvās karai vrat nemā |

होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा ॥ ३१ ॥

hoy siddha upajai ur premā || 31 ||

जय जय जय लक्ष्मी भवानी ।

jay jay jay lakṣmī bhavānī |

सब में व्यापित हो गुणखानी ॥ ३२ ॥

sab meṃ vyāpit ho guṇakhānī || 32 ||

तुम्हारो तेज प्रबल जग माहीं ।

tumhāro tej prabal jag māhīṃ |

तुम सम कोउ दयालु कहुँ नाहिं ॥ ३३ ॥

tum sam kou dayālu kahum nāhiṃ || 33 ||

मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै ।

mohi anāth kī sudhi ab lījai |

संकट काटि भक्ति मोहि दीजै ॥ ३४ ॥

saṃkaṭ kāṭi bhakti mohi dījai || 34 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

भूल चूक करि क्षमा हमारी ।

bhūl cūk kari kṣamā hamārī |

दर्शन दीजै दशा निहारी ॥ ३५ ॥

darśan dījai daśā nihārī || 35 ||

केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई ।

kehi prakār maiṃ karauṃ baṛāī |

ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई ॥ ३६ ॥

jñān buddhi mohi nahiṃ adhikāī || 36 ||

बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी ।

bin darśan vyākul adhikārī |

तुमहि अछत दुख सहते भारी ॥ ३७ ॥

tumahi achat dukh sahate bhārī || 37 ||

नहिं मोहि ज्ञान बुद्धि है मन में ।

nahiṃ mohi jñān buddhi hai man meṃ |

सब जानत हो अपने मन में ॥ ३८ ॥

sab jānat ho apane man meṃ || 38 ||

रूप चतुर्भुज करके धारण ।

rūp caturbhuj karake dhāraṇ |

कष्ट मोर अब करहु निवारण ॥ ३९ ॥

kaṣṭa mor ab karahu nivāraṇ || 39 ||

त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो बेगि सब त्रास ।

trāhi trāhi dukh hāriṇī, haro begi sab trās |

जयति जयति जय लक्ष्मी, करो दुश्मन का नाश ॥

jayati jayati jay lakṣmī, karo duśman kā nāś ||

रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर ।

rāmadās dhari dhyān nit, vinay karat kar jor |

मातु लक्ष्मी दास पै, करहु दया की कोर ॥

mātu lakṣmī dās pai, karahu dayā kī kor ||

अर्थ

भक्त समुद्र-पुत्री लक्ष्मी को पुकारता है, जो समुद्र मन्थन के चौदह रत्नों में प्रकट हुईं और विष्णु के हर अवतार में उनकी सेवा करती रहीं, और श्रीराम के अवतार में जनकपुर में सीता रूप में प्रकट हुईं। उनसे ज्ञान, समृद्धि और क्षमा माँगी गई है। अन्तिम पद कहते हैं कि श्रद्धा से चालीस दिन पाठ करने वाला रोग और अभाव से मुक्त होता है।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।